Vol 5, Issue 9, 2022 **Impact Factor:2.58** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2022.5.9.5712

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सड़क के बच्चों के बीच ड्रग व्यसन – आगरा शहर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Sweta

Research Scholar, Department of Sociology, Dr. B. R. Ambedkar University, Agra, India

Dr. Mohd. Arshad

Professor & Head, Department of Sociology, Dr. B. R. Ambedkar University, Agra, India

सारांश

औद्योगिक क्रांति के बाद सड़क के बच्चों की संख्या विकासशील देशों में बढ़ती जा रही है यह बदलती दुनिया और बढ़ते विकास ने सड़क के बच्चों में नशीले पदार्थों के सेवन की खतरनाक स्थिति उत्पन्न कर दी है। भारत में बड़ी संख्या में सड़क के बच्चे नशे की लत में लिप्त है। सड़क के बच्चों की जीवन शैली, इनकी निरंतर संपर्क की प्रकृति बच्चों को ड्रग्स के दुरुपयोग के प्रति उत्साहित करती है लेकिन ड्रग्स का अधिक सेवन करने से सड़क के बच्चों को कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य आगरा शहर के 6 से 14 वर्ष तक के सड़क के बच्चों के बीच ड्रग व्यसन का अध्ययन करना है शोधकर्ताओं ने शोध पेपर के लिए 200 सड़क के बच्चों को चयनित किया है निष्कर्ष में पाया गया कि ड्रग्स का दुरुपयोग करने के लिए सड़क के बच्चों के पीछे उनका मानसिक असंतुलन, साथियों का प्रभाव, तनाव से राहत और समूह में उच्चता बनाना आदि अन्य कारक है। इस अध्ययन द्वारा सड़क के बच्चों के बीच ड्रग व्यसन से संबंधित सभी तथ्यों को उजागर किया है जिससे बुनियादी आवश्यकताओं की कमी,सामाजिक अलगाव, नशीले पदार्थों तक सफलतापूर्वक पहुंच, माता–पिता का दुर्व्यवहार, साथियों का प्रभाव, घर का नकारात्मक वातावरण, दुख को कम करने जैसी कुंठाओ ने सड़क के बच्चों में नशे की प्रवृत्ति में वृद्धि की। नशे की लत ने बच्चों में शारीरिक कमजोरी, रोग, अनिंद्रा, उत्तेजित व्यवहार जैसी स्वास्थ्य समस्याओं को पैदा किया है। राज्य, गैर सरकारी संगठनों और अन्य उपक्रमों को भी सड़क के बच्चों की नशे की लत से निपटने के लिए प्रयास करना चाहिए।

शब्दकुंजी – *सड़क के बच्चे, ड्रग व्यसन, सामाजिक अलगाव, समाजशास्त्रीय अध्ययन*

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रस्तावना

बढ़ता हुआ शहरीकरण और बड़े पैमाने पर लोगों का शहरों में पलायन सड़क के बच्चे पैदा करने के लिए उत्तरदायी है। वैश्विक असमानता के कारण इन सड़क के बच्चों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है सड़क पर रहने वाले या काम करने वाले बच्चों की संख्या 100 मिलियन से भी अधिक बढ़ रही है जिसके कारण अत्यधिक गरीबी, खाद्य असुरक्षा, स्वास्थ्य को खतरा, शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सड़क के बच्चों का दरिद्रता पूर्ण जीवन अपर्याप्त सामाजिक–आर्थिक प्रोत्साहन खतरों के बीच जीवन यापन करते हैं और इन्हीं कठोर वास्तविकताओ में सड़क पर जीवित रहने के लिए नशीली दवाओं की लत लगा लेते हैं ये बच्चे निर्धन जीवन का सामना करने के लिए सहकर्मी प्रभाव, मादक द्रव्य तक आसानी पहुंच, तनाव से मुक्ति पाने के कई कारणों से नशीली दवाओं की लत से ग्रसित हो जाते हैं।

साहित्य समीक्षा

A.M. Gaidhane, Q. S Zairuddin, L.Waghmare, S.Shahbhag, Sanjay Zadpey and Sudhakar R. Johrapurkar (2008) अपने इस लेख में मुम्बई के 11–19 वर्ष के सड़क के बच्चों के बीच मादक द्रव्यों के सेवन का अध्ययन किया। 163 लड़कों में से 132 औसत आयु लड़के मादक द्रव्य सेवनए 87 शारीरिक शोषण, 52 यौन शोषण से ग्रसित थे। 31 लड़के जो मादक द्रव्य सेवन में लिप्त थे उनके साथ शारीरिक रूप से दुर्व्यवहार भी हुआ। 104 सड़क के बच्चे मादक द्रव्य सेवन में निकोटिन का प्रयोग करते थे। अधिकांश बच्चे इनहेलेट, अल्कोहल एवं उत्तेजक का प्रयोग कर रहे थे।

Nimhans1 द्वारा WHO2 (2008-2009) - बैंगलोर में इस अध्ययन का उद्देश्य सड़क के बच्चों में पदार्थ के उपयोग के तरीकों का आकलन करना है।ॅभ् के अनुमान द्वारा भारत के शहरों और कस्बों में 25–90 प्रतिशत सड़क के बच्चे मुख्य रूप से स्याही, इंरेजर फ्लुइड का दुरूपयोग करते हैं। तम्बाकू इनहेलेट और कैनविस हेरोइन जैसी दवाओं का दुरूपयोग कर सड़क के बच्चे हमेशा नशे में रहते हैं। इनहेलेट के प्रयोग से सड़क जीवन में दर्द, भय, भूख, भावनात्मक संकट जैसी कठिनाईयों से संघर्ष करने की क्षमता बच्चों को प्राप्त होती है।

K. Thapa, S. Ghatane, SP Rimal (2009) इस अध्ययन में नेपाल के 'धारण मुंसिपालिटी' के सड़क के बच्चों के बीच स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की पहचान क्रासअनुभागीय वर्णनात्मक अध्ययन से करना रहा है। अध्ययन में 87.5 सिगरेट पीने, 50 प्रतिशत शराब पीने एवं 72.9 प्रतिशत नशीली पदार्थ के सेवन की आदत से ग्रसित हैं।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

इस अध्ययन में उत्तरदाताओं द्वारा प्रयोग की जाने वाली एक मात्र दवा गोंद सूंघना (डैड्राइट) थी।

S. Narayan, Suresh Joshi (2013) वर्तमान अध्ययन सड़क के बच्चों में मादक द्रव्यों के प्रयोग को रोकने की नीतियों को ज्ञात करना था। सड़क के बच्चे निकोटीन व शराब का दुरूपयोग करते हैं जिसका प्रमुख कारण गरीबी और सहकर्मी दबाव था। मादक द्रव्य शरीर के महत्वपूर्ण अंग श्वसन, पाचन, मौखिक चेहरे और हृदय को हानि पहुंचाते हैं भारत में सड़क के बच्चों के अधिकारों को ज्ञात कर इनके लिए एकीकृत कार्यक्रम प्रमुख शहरों में लागू किये जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, आश्रय, पोषण और इनके अधिकारों पर कार्य सम्पन्न हुआ।

Indrapal Ishwar Ji Meshram, Stephen Gade L. and Pothu Raju Battna (2015) सिंकदराबाद और हैदराबाद की सड़क पर क्रासअनुभागीय अध्ययन द्वारा सड़क के बच्चों के बीच एनीमिया का प्रसार, पोषण स्थिति और मादक द्रव्यों का सेवन का आकलन किया गया। 8–18 वर्ष के सड़क के बच्चों में एनीमिया 54 प्रतिशत पतलापन का प्रचलन 26 प्रतिशत, 42 प्रतिशत मादक द्रव्यों का सेवन और 14प्रतिशत यौन जोखिम व्यवहार शामिल था। मादक द्रव्यों का अत्यधिक सेवन एवं यौन भागीदारी 5 वर्ष से अधिक सड़क पर रहने वाले बच्चों, रेलवे परिसर और होटलो में काम करने वाले बच्चों में थी।

Jhakar A., Sharma P. (2017) इस अध्ययन का उद्देश्य जयपुर शहर की सड़कों पर रहने वाले 5–15 वर्ष तक के बच्चों की मादक द्रव्यों के सेवन और उनसे जुड़े कारकों का आकलन करना रहा है। इस आबादी के अध्ययन में पदार्थों के प्रयोग के लिए तीन सबसे सामान्य कारण सहकर्मी दबाव (31.5 प्रतिशत), आत्मविश्वास में वृद्धि और अत्यधिक जिज्ञासा(19.6 प्रतिशत) है। अन्य कारण दुखी महसूस होने व भूख कम करना रहा। पदार्थ सेवन की महत्वपूर्ण उम्र 9–13 वर्ष थी।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य सड़क के बच्चों के बीच ड्रग व्यसन की आदत का कारण, प्रकार और क्यों है का अध्ययन करना है।

अध्ययन की पद्धति

एक सुदृढ़ शोध पद्धति शोध की रीढ की हड्डी होती है जो शोध को आधार देती है इसीलिए विषय का चयन सही होना चाहिए इस शोध में गहराई से ज्ञात करने के लिए गुणात्मक व मात्रात्मक शोध पद्धतियों से सड़क के बच्चों को ड्रग व्यसन क्यों और उसकी आदत का प्रकार कैसे प्रभावित करता है का विश्लेषण होगा।यह शोध आगरा शहर की 6 से 14 वर्ष के सड़क के बच्चों में ड्रग व्यसन का अध्ययन करता है इसमें शोधकर्ता ने

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अध्ययन के लिए आगरा शहर की व्यस्त सड़क व बाजार सड़क को सर्वेक्षण का क्षेत्र चयनित कर 200 उत्तर दाताओं को सोउद्देश्यपूर्ण निर्देशन प्रविधि द्वारा चयन किया है शोध सर्वेक्षण साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आयोजित कर एवं गहन अंतर्दृष्टि से अधिक जानकारी प्राप्त कर व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य संकलन किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका. 01

लिंग		
	उत्तरदाताओं की संख्या	**प्रतिशत**
बालक	124	62.0
बालिका	76	38.0
कुल योग	200	100.0

तालिका – 1 से स्पष्ट है कि कुल 200 सड़क के बच्चों में 124 बालक (62 प्रतिशत) एवं 76 बालिका (38 प्रतिशत)है।इस प्रकार सड़क पर स्ट्रीट लड़कियों की तुलना में स्ट्रीट लड़कों की संख्या अधिक होती है ।

तालिका. 02

आयु		
	उत्तरदाताओं की संख्या	**प्रतिशत**
6–8 वर्ष	19	9.5
8–10 वर्ष	31	15.0
10–12 वर्ष	43	21.5
12–14 वर्ष	107	53.5
कुल योग	200	100

तालिका – 2 इसमें निदर्शन का विश्लेषण शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में 6 से 14 वर्ष तक 200 सड़क के बच्चों को सम्मिलित कर कुल 4 आयु वर्गो में विभाजित किया है। 107 (53.5 प्रतिशत) बच्चे 12 –14 , 43 (21.5 प्रतिशत) बच्चे 10 से 12, 30 (15.5 प्रतिशत) बच्चे 8–10 और अंतिम 19 (9.5 प्रतिशत) बच्चे 6 – 8 आयु वर्ग के हैं।इस प्रकार 10 से 14 वर्ष तक के बच्चों की संख्या सड़क पर अधिक है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

तालिका. 03

जाति		
	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सामान्य	26	13′0
पिछड़ी जाति	79	39.5
अनुसूचित जाति	94	47.0
अनुसूचित जनजाति	1	0.5
कुल योग	200	100.0

तालिका – 3 जाति पर आधारित विश्लेषण में अनुसूचित जाति के सड़क के बच्चों की 94 (47 प्रतिशत) संख्या, पिछड़ी जाति के 79 बच्चे (39.5 प्रतिशत), सामान्य जाति के 26 (13 प्रतिशत) एवं सबसे कम संख्या अनुसूचित जनजाति के बच्चों की 1 (0.5 प्रतिशत) है।

तालिका. 04

किस प्रकार का कार्य करते हो–		
	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
बुट पालिश	18	9.0
कबाड बीनना	23	11.5
चाय की दुकान पर	41	20.5
पेम्फलेट बांटना	8	4.0
भीख मांगना	12	6.0
तम्बाकू बेचना	14	7.0
खिलौना बेचना	30	15.0
होटल में	15	7.5
घरेलू कार्य (साफ–सफाई)	39	19.5
कुल योग	200	100.0

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

तालिका – 4 सड़क के बच्चों के कार्य के प्रकारों का विश्लेषण यह है की कुल निदर्शन में 41 (20.5 प्रतिशत) सड़क के बच्चे चाय की दुकान पर, 39 (19.5 प्रतिशत) घरेलू कार्य में, 23 (11.5 प्रतिशत) कबाड़ बीनने में, 30 (15 प्रतिशत) खिलौने बेचने में, 15 (7.5 प्रतिशत) होटल के कार्यों में, 14 (7 प्रतिशत) तंबाकू बेचने में, 12 (6 प्रतिशत) भीख मांगने में, 8 (4 प्रतिशत) स्कूल, कॉलेजों, किसी कंपनियों या विज्ञापनों के प्रचार प्रसार के लिए पैंफलेट बांटकर अपना व अपने परिवारों का पेट पालते हैं।

तालिका. 05

क्या आप नशा करते हैं–		
	उत्तरदाताओं की संख्या	**प्रतिशत**
हाँ	107	53.5
नहीं	93	46.5
कुल योग	200	100.0

तालिका – 5 इस तथ्य का विश्लेषण है कि कुल निदर्शन में से 107 (53.5 प्रतिशत) बच्चों ने उत्तर दिया कि वे नशा करते हैं जबकि 93 (46.5 प्रतिशत) बच्चे नशा नहीं करते हैं।

तालिका. 06

नशे की आदत का कारण क्या है–		
	उत्तरदाताओं की संख्या	**प्रतिशत**
मित्र संगत	67	62.6
पारिवारिक कलह	22	20.6
अन्य कोई	18	16.8
कुल योग	107	100.0

तालिका – 6 सड़क के बच्चों मे नशे की आदत के कारण का विश्लेषण यह है कि 67 (57 प्रतिशत) बच्चों को मित्रों के साथ रहने पर नशे की आदत हो गई जबकि, 22 (20.6 प्रतिशत) बच्चे पारिवारिक कलह से एवं 18 (16.8 प्रतिशत) बच्चे अन्य कोई कारण से नशे की आदत की चपेट में है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

तालिका. 07

नशा का प्रकार क्या है–		
	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
तम्बाकू	61	57
मादक द्रव्य	25	23.37
भांग	10	9.35
विक्स	11	10.28
कुल योग	107	100

तालिका – 7 यहां सड़क के बच्चों के नशे के प्रकार का विश्लेषण है 61 (57 प्रतिशत) सड़क के बच्चे तंबाकू का प्रयोग करके स्वयं को नशे में लिप्त रखते हैं जबकि 25 (23.37 प्रतिशत) बच्चे मादक द्रव्य सेवन करके एवं 10 (9.35 प्रतिशत) बच्चे भांग का और 11 (10.28 प्रतिशत) बच्चे विक्स से अपने आप को बेहोशी की अवस्था में डालते हैं।

तालिका. 08

नशे की आदत क्यों है–		
	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
समस्याऐं भूलना	60	56.07
भूख मिटाना	10	9.35
कम मूल्य पर मिलना	12	11.21
बेहोशी के लिए	25	23.37
कुल योग	107	100.0

तालिका – 8 इस तथ्य का विश्लेषण है की 60 (56.07 प्रतिशत) सड़क के बच्चे नशा अपनी समस्याएं भुलाने के लिए करते हैं जबकि 25 (23.37 प्रतिशत) बच्चे बेहोशी में अपना समय व्यतीत करने के लिए एवं 10 (9.35 प्रतिशत) बच्चे भूख मिटाने के लिए और 12 (11.21 प्रतिशत) बच्चे कम मूल्य पर नशा उपलब्ध हो जाने के कारण नशे को आदत बना लेते हैं जिस कारण इन बच्चों को कई समस्याओं व बीमारियों का शिकार हो जाते हैं।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

निष्कर्ष एवं सुझाव

यह पेपर आगरा के सड़क के बच्चों के बीच ड्रग व्यसन का अध्ययन करता है इसीलिए यह अध्ययन उपर्युक्त विषय पर महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है कि ड्रग व्यसन कैसे सड़क के बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर उनकी मासूमियत को दाव पर लगाता है। सड़क के बच्चे अपने साथियों के प्रभाव, पारिवारिक समस्याओं को भूलने, गरीबी, भूख, दुख दर्द को कम करने व बेहोशी मैं आने के लिए ड्रग्स का प्रयोग करते हैं नशे की आदत बन जाने पर सड़क के बच्चों के साथ सड़क पर कई प्रकार के दुर्व्यवहार होते हैं एवं इन बच्चों का स्वास्थ्य जीवन बहुत दयनीय स्थिति में आ जाता है।

सड़क के बच्चों को ड्रग व्यसन से बचाने व आदत को कम करने के लिए सुधार प्रोग्राम, काउंसलिंग प्रोग्राम चलाए जाने चाहिए साथ ही अनौपचारिक शिक्षा,कौशल विकास प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे यह इन कार्य में व्यस्त होकर नशे की आदत को त्याग पाएंगे।

सन्दर्भ

1. http://www.en.wikipedia.org/wiki/street-children.
2. Gaidhane, A.M., Syed, Q., Zahiruddin: “Substance abuse among street children in Mumbai”, Vulnerable Children and Youth Studies, Volume 3, Pages 42-51, 2008.
3. NIMHANS WHO: Inhalant use of among street children in Banglore (2008-2009).
4. Thapa, K., Ghatane, S., Rimal, S.P.: “Health problems among the street children of Dharan municipality”, Kathmandu University Medical Journal, Vol 7, No 3, 2009.
5. Narayan,S. : “Preventing-substance abuse among street children in india: a literature review”, Health Science Journal, 2013.
6. Meshram, I.I., Stephen, G. L., & Battina, P. R. (2015). Nutritional Status and Substance Abuse among Street Children in South India. Indian Journal of community Health, 27(1), 52-59. https://www.researchgate.net/publication/283096531_Nutritional_status_and_substance_abuse_among_street_children_in_South_India.
7. Jhakar, A., Sharma, P., Hossain, S., Yadav, S., & Sen, V. (2017). Study of Substance Abuse by Street Children in Jaipur City, Rajasthan. Journal of Pharmacy Practice and Community Medicine, 3(3), 176-179.